विद्याभवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

विषय-हिंदी ***दिनांक-07/07/2020***
वर्ग-तृतीय ***वर्ग-शिक्षिका— नीतू कुमारी***
(N.C.E.R.T. पर आधारित)
पाठ-9 (दो-दो कितने)

सुप्रभात बच्चों,

पिछली कक्षा में आपने 'दो-दो कितने' कविता का अध्ययन किया। हमें पूर्ण विश्वास है की आप अध्ययन-सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़े होंगे। आज की कक्षा में उसी कविता का भावार्थ जानना है। जो कि इस प्रकार है:—

हमारे शरीर में बहुत -से अंगों की संख्या दो हैं। उनका अपना-अपना महत्व और उपयोग है। गुलज़ार जी की प्रस्तुत कविता का भावार्थ यह है कि—गिनकर देखो की एक शरीर में कितने अंग दो हैं। जिनसे हम देखते हैं वो आँखे और उनके ऊपर भौंहें दो हैं। एक नाक के दो नथुने हैं, जिससे कि हम ख़ुशबू को सूँघते हैं। अनेक तरह के भाषाओं को बोलने वाले हाथ दो हैं। लाखों तरह की आवाज़ों को सुनने वाले कान दो हैं। दो कंधे,दो बाहें, दो कोहनियाँ, हाथ भी दो और अंगूठे भी दो ही हैं। दोनों हाथों की कलाइयाँ दो, टाँगे दो और घुटने भी दो ही हैं। दोनों पैरों के दो टखने हैं। तलवे दो हैं, भागने के लिए एड़ियाँ दो हैं। हमारे मुँह पर गाल भी दो हैं। दोनों पहलू झाँकने के लिए बगलें भी दो हैं। इतने सारे दो हैं , लेकिन दिल, जान एक है। एक आकाश, एक सूरज, एक ज़मीं और हिंदुस्तान एक ही है।

हमने सीखा— इस कविता से हमने अपने शरीर के विविध अंगों के बारे में जआना। इसके साथ ही कविता से हिंदुस्तान की अखंडता को भी जाना।

बच्चों, अध्ययन-सामग्री को वर्ग-कार्य कॉपी में सुंदर ततगा शुद्ध-शुद्ध अक्षरों में लिखें।

गृहकार्य :—

बच्चों पेज नं-57 में दिए गए अभ्यास का प्रश्न संख्या-2 को हल करें।